VIBRANT GANGA

कोसी नदी

शक्ति का रूप

नमामि गंगे

भारतीय वन्यजीव संस्थान
Wildlife Institute of India

विस्तृत जानकारी

- कोसी एक सीमापार नदी है जो तिब्बत, नेपाल और भारत से होकर बहती है। यह तिब्बत में हिमालय के उत्तरी ढलानों और नेपाल के दक्षिणी ढलानों से होकर बहती है।
- यह पूर्ववर्ती नदी तिब्बती हिमालय से निकल के हिमालय पर्वतमाला को काटती हुई गंगा जैव–भौगोलिक क्षेत्र (7बी) के जलोढ़ मैदान पर एक मेगा फैन बनाती है।
- यह तंग घाटी बराह क्षेत्र से होकर मैदानी इलाको में बहती है और आगे की ओर बहते हुये बीरपुर से भारत में प्रवेश करती है। यह 720 किलोमीटर की दूरी तय करती हुई, बिहार में कुरूसेला के पास गंगा नदी से मिल जाती है।
- नदी तिब्बत, नेपाल और भारत में लगभग 74,500 वर्ग किलोमीटर के क्षेत्र में बहती है। भारत में नदी 11,070 वर्ग किलोमीटर के क्षेत्र में बहती है। इसे दुनिया की सबसे गतिशील नदी प्रणाली माना जाता है।
- यह नदी बेसिन उन पहाड़ियों से घिरी हुई है जो इसे उत्तर में यारलुंग त्सांगपो नदी, पश्चिम में गंडकी और पूर्व में महानंदा से अलग करती है।
- बागमती, कमला–बलान और अधवारा नदियॉ प्रमुख सहायक नदियॉ हैं, जो कोसी नदी के दाहिने किनारे पर मिलती हैं।

मुख्य विशेषताऐं

- कोसी नदी दुनिया की सबसे ज्यादा गाद ले जाने वाली नदियों में से एक है। रूपात्मक तौर पे, कोसी नदी बेसिन अपनी प्रवाह के दौरान एक ब्रैडेड नदी प्रणाली बनाती है और अनुप्रवाह क्षेत्र में लगभग 43 मीट्रिक टन/वर्ष तलछट भार अपने साथ लाती है।
- नदी अत्यधिक क्षरणशील जलोढ़ से होकर गुजरती है, बाढ़ के दौरान बार–बार अपना मार्ग बदलती है, और विनाशकारी बाढ़ और जीवन को क्षति पहुंचाने के कारण इसे "बिहार का अभिशाप" कहा गया है।
- कोसी नदी बेसिन की जलवायु उत्तर में ठंडी से लेकर दक्षिण में उष्ण कटिबंधीय है।

कोसी नदी को तीन क्षेत्रों मे विभाजित किया गया है–

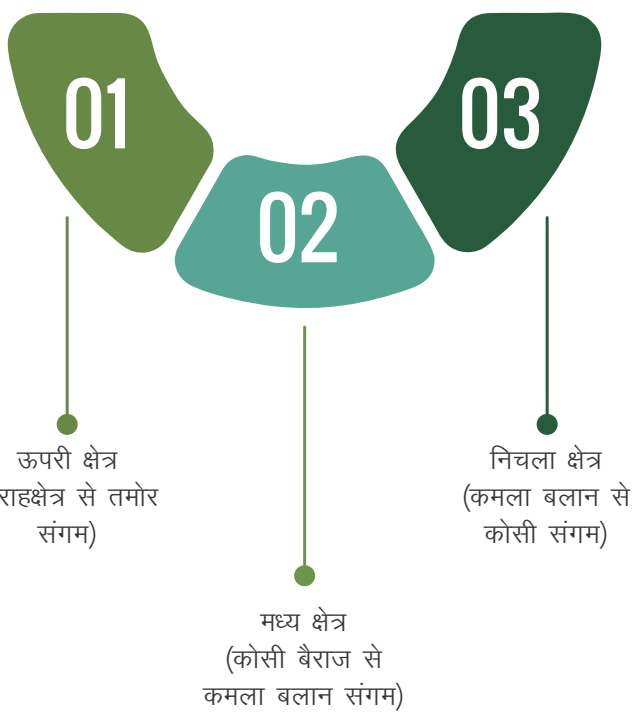

- कोसी नदी बेसिन में दो प्रकार के वन है। उष्णकटिबंधीय नम पर्णपाती वन पहाड़ियों और छोटानागपुर मैदानों में पाये जाते है और उष्णकटिबंधीय शुष्क पर्णपाती वनस्पति जलोढ़ मैदान में पाए जाते हैं।
- इस नदी बेसिन से 45 फैमिली से संबंधित 166 पक्षी प्रजातियों की सूचना मिली है, जिनमें से 48.8% प्रजातियां निवासी हैं, 35.4% शीतकालीन आगंतुक हैं और 15.8% प्रजातियां निवासी प्रवासी हैं।
- घड़ियाल और मग्गर भी दर्ज किए गए हैं।
- कोसी नदी से कछुओं की कुल 12 प्रजातियां दर्ज की गई हैं।
- कोसी नदी से उभयचरों की 10 प्रजातियों को दर्ज किया गया है जो कि चार फेमिली और नौ जेनेरा से संबंधित हैं।
- कोसी नदी से गांगेय डॉलफिन (*प्लैटनिस्टा गैंजेटिका*) की उपस्थिति की भी पुष्टि की गई है।

संकटग्रस्त (EN) प्रजातियाँ

सरीसृप
चित्रा

पक्षी
गरूड़

स्तनधारी
गांगेय डॉल्फिन

प्रमुख संरक्षित क्षेत्र

- सागरमाथा राष्ट्रीय उद्यान (नेपाल)
- कोशी टप्पू वन्यजीव अभ्यारण्य (नेपाल)
- कुशेश्वर अस्थान पक्षी अभ्यारण्य (भारत)

गंभीर रूप से संकटग्रस्त (CR) प्रजातियाँ

सरीसृप
घड़ियाल
लाल सिर कछुआ
ढोन्ड

पक्षी
बंगाल फ्लोरिकन

रोचक तथ्य

- कोसी जलोढ़ पंख, जो दुनिया में सबसे बड़ा है, 180 किलोमीटर लंबा और 150 किलोमीटर चौड़ा है।
- कोसी नदी को संस्कृत में "कौशिकी" के नाम से भी जाना जाता है।
- कोसी नदी को नेपाल में सप्तकोशी के नाम से जाना जाता है, क्योंकि यह सात नदियों के मिलने से बनी है।
- कोसी नदी बेसिन में कुछ सबसे ऊंची पर्वत चोटियां हैं, जैसे– मांउट एवरेस्ट, कंचनजंगा और लाहोत्से।
- कोसी नदी के जल शीर्ष (हेडवाटर) हिमालय से भी पुराने हैं।

नदी-परिदृश्य (रिवरस्केप) को बदलने वाले कारक

- कोसी नदी में वार्षिक बाढ़ के कारण मिट्टी का भारी क्षरण होता है और भारी मात्रा में गाद जमा हो जाती है।
- व्यापक नदी तल कृषि, जलाऊ लकड़ी के लिए नदी संसाधनों की निकासी और कोसी नदी के किनारे मछली पकड़ने की वजह से प्रमुख जलीय प्रजातियों के आवास को नुकसान पहुचा है।
- कोसी नदी पर बने जलविद्युत परियोजनाएं और बैराज, नदी के प्राकृतिक प्रवाह को बदलते हैं और संशोधित करते हैं।

एन एम सी जी
राष्ट्रीय स्वच्छ गंगा मिशन
जल शक्ति मंत्रालय
जल संसाधन, नदी विकास और
गंगा संरक्षण विभाग,
मेजर ध्यानचंद्र स्टेडियम, नई दिल्ली–110001

भारतीय वन्यजीव संस्थान
Wildlife Institute of India

जी ए सी एम सी
गंगा एक्वालाइफ कनजर्वेशन मॉनिटरिंग सेंटर
भारतीय वन्य जीव संस्थान
पोस्ट बॉक्स न. 18, मोहब्बेवाला, देहरादून–248002, उत्तराखंड
फोन न.- 91-135-260112-115
wii.gov.in/nmcg_phase2_introdution